

ग्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II--- जण्ड 3--- उपजन्ड (ii)

PART II-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 420]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, नवम्बर 19, 1970/कार्तिक 28, 1892

No. 420]

NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 19, 1970/KARTIKA 28, 1892

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह श्रसग संकलन के रूप में एखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

ORDER

INCOMETAX

New Delhi, the 18th November 1970

THE TAXATION LAWS (EXTENSION TO UNION TERRITORIES) (REMOVAL OF DIFFICULTIES) ORDER NO. 2 OF 1970

S.O. 3770.—Whereas certain difficulties have arisen in giving effect to the provisions of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) in the Union territories of Dadra and Nagar Haveli, Goa, Daman and Din and Pondicherry;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 7 of the Taxation Laws (Extension to Union Territories) Regulation, 1963 (3 of 1963), the Central Government hereby makes the following Order, namely:—

- 1. Short title and commencement.—(1) This Order may be called the Taxation Laws (Extension to Union Territories) (Removal of Difficulties) Order No. 2 of 1970.
 - (2) It shall be deemed to have come into force on the 1st day of April, 1963.
- 2. Computation of aggregate depreciation allowable and written down value.—In making any assessment under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), all depreciation actually allowed under the local laws shall be taken into account in computing the agreegate of all deductions in respect of depreciation referred to in clause (i) of sub-section (2) of section 34 and the written down value under sub-clause (2) of clause (6) of section 43 of the said Act:

. : . - ,

Provided that where in respect of any asset, depreciation has been allowed for any year both in the assessment made under the local law and in the assessment made under the income-tax Act, 1961, or under the Indian Income-tax Act, 1922 or any Act repeated by that Act, or under the Indian Income-tax Act, 1886, the greater of the two sums allowed shall only be taken into acount:

Provided further that where in respect of any period, no depreciation was actually allowed under the local law or the depreciation actually allowed cannot be ascertained, depreciation in respect of that period shall be calculated at the rate for the time being in force under the Income-tax Act, 1961 or under the Indian Income-tax Act, 1922, or any Act repealed by that Act or under any executive orders, issued when the Indian Incometax Act, 1886 was in force, as the case may be, and the depreciation so calculated shall be deemed to be the depreciation actually allowed under the local law.

Explanation.—For the purposes of this paragraph, "local law" means-

- (i) in relation to the Union territory of Dadra and Nagar Haveli, any law relating to income-tax or super-tax other than the Income-tax Act, 1961, in force in that territory immediately before the 1st day of April, 1963; and
- (ii) in relation to the Union territories of Goa, Daman and Diu and Pondicherry, any law relating to income-tax or super-tax in force in the Union territory concerned immediately before the 1st day of April, 1963.

[No. 181/F. No. 1(345)/68-TPL.]

R. N. MUTTOO, Addl. Secy.

विस मंत्रालय

(राजस्व ग्रीर बीमा विभाग)

ग्रादेश

चायकर

नई विल्ली, 18 नवम्बर, 1970

कराधान विधियां (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) (कठिनाईयों का िराकरण) श्रावेश सं० 2, 1970

का० ग्रा० 3770.—यतः भ्राय कर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 41) के उपबन्धों को दादर भौर नागर हवेली, गोवा, दमण भौर दीव भौर पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्रों में प्रभावी करने में कित्तपय कठिनाईयां पैदा हो गई हैं;

हिंद्यत : ब्रब कराधान विधियां (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) विनियम, 1963(1963 का 3) की धारा 7 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निम्नलिखित ब्रादण बनाती है, श्रर्थात्:—

- संक्षिप्त नाम ग्रीर प्रा भ--(1) यह श्रादेश कराधान विधियां (संघ राज्य क्षेत्रों तक विस्तारण) (कठिनाइयों का निराकरण) श्रादेश अंख्या 2, 1970 कहा जा सकेगा ।
 - (2) यह अप्रैल, 1963 के प्रथम दिन को प्रयुत्त हम्रा समझा जाएगा।
- 2. संकलित सनुनेय श्रवक्षयण 'रॉप स्रविक्षित पृत्य की संगणना.--श्राय कर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कोई निर्धाण्ण करने में स्थानीय विधियों के श्रधीन वास्तिविक रूप से श्रनज्ञान किए गए सब श्रवक्षयणों को उपत श्रधिनियम की धारा 34 की उपधारा

(2) के खंड (1) में निर्दिष्ट अवक्षयण की बाबत में संकलित सभी कटौतियों और धारा 43 के खंड (6) के उपखंड (ख) के श्रधीन अवलिखित मुख्य की संगणना करने में ध्यान में रखा जाएगा:

परन्तु जहां किसी मास्ति की बाबत में किसी वर्ष के लिए, दोनों, किसी स्थानीय विधि के मधीन किए गए निर्धारण में भीर धायकर प्रधिनियम. 1961 के मधीन, या भारतीय प्रायकर प्रधिनियम, 1922 या उस प्रधिनियम द्वारा निरासित किसी घिधिनियम के भधीन या भारतीय भायकर धिधिनियम, 1886 के प्रधीन किए गए निर्धारण में, धवक्षयण धनुज्ञात किया गया है, तो इन दोनों राशियों में से जो धिधिक है उसी को केवल ध्यान में रखा जाएगा:

परन्तु यह और कि जहां किसी कालावधि की बाबत स्थानीय विधि के अधीन कोई अवक्षयण वास्तविक रूप से अनुजात नहीं किया गया था या वास्तविक रूप से अनुजात अवक्षयण अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है वहां उस कालावधि की बाबत अवक्षयण, यथास्थिति आयकर अधिनियम, 1961 के अधीन या भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 या उस अधिनियम द्वारा निरासित किसी अधिनियम के अधीन या जब भारतीय आयकर अधिनियम, 1886 प्रवृक्त था तब जारी किए गए किसी कार्यपालक आदेश के अधीन, तत्समय प्रवृक्त वर पर संगणित किया जाएगा और इस प्रकार संगणित अवक्षयण स्थानीय विधि के अधीन वास्तविक रूप से अनुजात अवक्षयण समझा जाएगा।

स्य टोकरण.-इस पैरा प्रयोजन के लिए 'स्थानीय विधि' से-

- (i) दादर भीर नागर हवेली संघ राज्य क्षेत्र के सम्बन्ध में भ्रप्रैल, 1963 के प्रथम दिन से श्रद्ध्यवहित पूर्व उस राज्य क्षेत्र में प्रवृत्त भ्रायकर श्रिधनियम, 1961 से भिन्न भ्रायकर या श्रिधकार से संबंधित कोई विधि ; भौर
- (ii) गोवा, दमण ग्रौर दीव भ्रौर पाण्डिचेरी संघ राज्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में भ्रप्रैल, 1963 के प्रथम दिन से ग्रव्यवहित पूर्व सम्बन्धित संघ राज्य क्षेत्र में प्रवृत्त श्रायकर या श्रीधकर से संबन्धित कोई विधि। ग्रिभिग्रेत है।

[मं॰ 181/एफ॰ सं॰ 1(345)/68-टी पी एल.] भार॰ एन॰ मुट्टू, अवर सचिव।